आचार्य हरिहर पाण्डेय कृत 'उमोदवाहमहाकाव्य' मे शिव-पार्वतीविवाहविमर्श

निहारिकाबहन बाबुभाई प्रजापति

आचार्य हरिहर पाण्डेय रचित उमोदवाहमहाकाव्यम मे शिव पार्वती के विवाह,कार्तिकेय जन्म तथा तारकासुर के वध की कथा वर्णित है। १६ सर्गो से युक्त इस आधुनिक महाकाव्य मे वेदान्त की विचारधारा भी प्रशंसनीय है। प्रस्तुत लेख मे शिव और पार्वती के विवाह योजना की विचारणा की गई है।

भारतीय संस्कृति मे सोलह संस्कार दिये गये है जो इस प्रकार है।

१ गर्भाधान संस्कार २ जातकर्म संस्कार
३ पुंसवन संस्कार ४ सीमंतोन्नयन संस्कार
५ नामकरण संस्कार ६ निष्क्रमण संस्कार
७ अन्नप्राशन संस्कार ८ चूड़ाकरण/मुंडन संस्कार
९ कर्णवेध संस्कार १० अक्षरारम्भ संस्कार
११ उपनयन संस्कार १२ वेदारम्भ संस्कार
१३ केशान्त संस्कार १४ समावर्तन संस्कार
१५ विवाह संस्कार १६ अन्त्येष्टि संस्कार

उपर्युक्त सभी संस्कारो मे से विवाह संस्कार सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार है। शास्त्रो मे विवाह को 'यज्ञ' कहा गया है। विवाह को धर्म या धर्मसाधना का आवश्यक अंग माना गया है। अन्य आश्रमो से गृहस्थाश्रम को धर्मशास्त्रो मे अधिक महत्व दिया गया है। विवाह के बाद ही गृहस्थाश्रम मे प्रवेश हो सकता है। गृहस्थाश्रम अन्य आश्रमो को पोषण देता है इसमे विवाह योजना ही कारणभूत है। धर्म शास्त्रो मे विवाह के आठ प्रकार दिये गए है जो निम्न लिखित है। (२)

१ ब्रह्म विवाह
२ देव विवाह
३ आर्ष विवाह
४ प्राजापत्य विवाह
५ गंधर्व विवाह
६ असुर विवाह
७ राक्षस विवाह
८ पैशाच विवाह

गृहयसूत्रो मे विवाह विधि को तीन भागो मे विभाजित किया गया है। (३)

१ विवाहविधि का पूर्वाग

- विवाह प्रस्ताव
- वर कन्या परीक्षण
- विवाह सम्मति –वाग्दान
- बारात का प्रस्थान
- स्वागत

२ परिणयन (विवाह की प्रमुख विधि)

- पाणिग्रहण
- होम
- प्रदक्षिणा
- सप्तपदी

३ विवाह विधि का उत्तरांग

- ध्रुवदर्शन
- चतुर्थीकर्म
- बिदाई

उमोदवाहमहाकाव्य मे प्रारंभिक ८ सर्गो मे शिव स्वरूप अद्वेतवाद, कर्म, भक्ति, आस्तिकमत, नास्तिकमत इत्यादि का वर्णन मिलता है। सर्ग नौ मे विवाह के बारे मे उल्लेख मिलता है और अंतिम सोलहवे सर्ग मे पार्वती की बिदाई का द्रश्य प्राप्त होता है। आचार्य हरिहर पाण्डेय ने उपर्युक्त विवाह के कई अंगो का अपने महाकाव्य में प्रयोग किया है जो प्रस्तुत शोध के चर्चा का विषय है।

(१) विवाह विधि का पूर्वांग

प्रस्ताव

अद्वैत विषयक उमा के विचारो को सुनकर नारद समझ जाते है कि उमा ही दक्ष कन्या सती है। (४) अतः वह पार्वती समक्ष शिव के गुणो का वर्णन कर के उसको शिव के प्रति आकर्षित करने का प्रयास करते है। भगवान शिव ही उमा के सभी प्रश्नो एवं जिज्ञासाओ का समाधान कर सकते है ऐसा नारद कहते है। और पार्वती को शिव को गुरु और पति के रुप मे वरण करने के लिए भी कहते है। पार्वती के विचार सुनकर नारद शिव के पास आकर उन्हे तारकासुर के वध हेतु पुत्र उत्पन्न करने के लिए तथा पार्वती से विवाह करने के लिए समजाते है। नारद की बात सुनकर शिव सप्तर्षिओ को पार्वती के गुणो का परीक्षण करने भेजते है।(५) बाद मे यही सप्तर्षि गण विवाह प्रस्ताव लेकर हिमालय के पास जाते है।

वर - कन्या परीक्षण

नारद मुनि के जाने के बाद शिव सप्तर्षिओ को बुलाकर पार्वत का परीक्षण करने के लिए तथा उसके पिता के मत को जानने के लिए अनुरोध करते है। सप्तर्षि गण गौरी के समीप आकर शिव की निन्दा करते ह। नारद से शिव स्वरूप को भलीभांति समझ चुकी गौरी सप्तर्षिओ को उपालंभ देती हैं। इस से लज्जित सप्तर्षि अपना वास्तविक परिचय देकर भगवान शिव की य विवाह इच्छा बताते है । पार्वती की सहमति प्राप्त करके सप्तर्षि गण हिमालय के पास कन्या के वाग्दान हेतु प्रस्थान करते है।

विवाह सम्मति / वाग्दान

पार्वती के विचार जानकर स्वीकृति पाकर सप्तर्षि गण उसके पिता हिमालय की अनुमति लेने हेतु राजा के पास आते है। सप्तर्षिओ का प्रस्ताव सुनकर हिमालय तुरंत ही शिव और पार्वती के विवाह की सम्मति दे देते है।(६) हिमालय से वाग्दान पाकर सप्तर्षि शिव के समक्ष आकर सब वृतान्त कहते है। शिव के अघोरी एवं बिभत्स स्वरूप को लेकर व्याकुल मेना इस विवाह मे अपनी असहमति जताती है बाद मे वह भी इस विवाह के लिए राजी हो जाती है।

बारात का प्रस्थान

हिमालय जैसा श्वसुर और उमा जैसी पत्नी मिले तो विवाह मे कोई दोष नही ऐसा मानकर शिव विवाह के लिए सज्ज होते है। शिव की बारात मे भूतगण, सप्तर्षि, देवगण और सन्यासीयो शामिल होकर शिव पार्वती

के विवाह का आनन्द लेते है। नन्दी पर सवार शिव और नाचते गाते बाराती विवाह की शोभा बढाते है। यहा ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, चन्द्र, कुबेर, वरुण, अग्नि, यम, वायु, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर जैसे कई बारातीयो का वर्णन है।

स्वागत

राजा हिमालय अतिथि गण और मेना द्वारा शिव पूजा होती है। शिव की तिलक क्रिया हेती है। मेना शिवस्तुति, सुंदर माला, तिलक, अक्षत आदि से शिव की पूजा करती है। साथ ही शिव को श्रीफल, सुपारी, चंदन, सुवर्ण मुद्रा आदि दिये जाते है। शिव के वास्तविक स्वरूप को देखकर प्रसन्न मेना शिव की आरती उतारती है और बाद मे शिव का विवाह मंडप मे प्रवेश होता है। - बरातियो के मनोरंजन के लिए लज्जा विहीन प्रौढ स्त्रीयाँ रखी गई है जो देवो को कई ताने सुनाती है। देव की उत्पत्ति तथा ऋषियो की कामस्खलन वृत्ति को कहेकर स्त्रीयाँ बरातियो की खिल्ली उडाती है। (८) देव भी उसके आक्षेपो का सोदाहरण उत२ देते है।

(२) परिणयन (विवाह की प्रमुख विधि)

पाणिग्रहण

विवाह मंडप मे आसन पर बिराजमान शिव को मधुपर्क प्रदान किया जाता है। कन्यादान के समय उनका गोत्र पूछा जाता है। अजन्मा शिव अपने गोत्र के बारे मे अजान है। वह नाद को ही अपना गोत्र मानते है बाद मे राजा हिमालय पार्वती का हाथ शिव के हाथ मे देते है। शिव भी धर्म, अर्थ और काम सम्बन्धी प्रत्येक कर्म उमा की सम्मति से करने की प्रतिज्ञा करते है। (९)

होम

पाणि ग्रहण के बाद शिव उमा का हाथ पकडकर पश्चिम दिशा मे अपने पास बिठाते है। शिव अपने अनुकूल हो ऐसी प्रार्थना करके विधिवत अग्नि मे होम देते है। पार्वती भी शिव के साथ दाम्पत्य जीवन के सुख की प्रार्थना करते हुए होम अर्पण करती है।

प्रदक्षिणा

पार्वती शिव के साथ अग्नि की प्रदक्षिणा करके अग्नि मे लाजाहुति देकर पति के दीर्घायु ओर परिजनों की समृद्धि के लिए प्रार्थना करती है। शिव भी उमा का पाणिग्रहण करके उसे अपने घर की रानी बनाने का वादा करते है। (१०)

सप्तपदी

प्रदक्षिणा और आपसी वचनो के बाद शिवने शिवा द्वारा सप्तपदी करवाई और ये मन्त्र पढे की विष्णु भगवान तुम्हे अन्न, तेज, धन, सुख, पशु और ऋतुओ की ओर ले चले । तुम मेरे अनुकूल रहो।

अका२यत् सप्तपदी शिवाया : शिवः
पठन् विष्णुरिषे नयेत्याम् ।
ऊर्जेडथर्पश्वर्तुमयो भवाय सखाय मे नित्य मनु व्रताय ॥ (११)

(३) विवाह विधि का उतरांग

ध्रुवदर्शन

सप्तपदी के बाद शिवने उमा को ध्रुव का दर्शन कराते हुए अपने और पार्वती के चित सदैव जुडे रहे , दोनो एक दूसरे के अनुकूल रहे ऐसी प्रार्थना की और पार्वती द्वारा अर्पण सुगन्धित श्वेत पुष्पो की माला को गले मे धारण किया। (१२) उमा ने भी शिव द्वारा अर्पित लाल पुष्पो की माला को स्वीकार किया । उसके बाद शिवने उमा की मांग को सिंदूर से अलंकृत किया।

वंदन

विवाह विधि सम्पन्न होने के बाद शिव - पार्वती वहां स्थित पूजनीय परिजनो को प्रणाम करते है। सबसे पहले वो दोनो ब्रह्मा का अभिवादन करते है। ब्रह्मा भी पार्वती को शीघ्र ही वीरपुत्र की माता होने का आशीर्वाद देते है ।(१३) तत्पश्चात वे दोनो वहा उपस्थित वयोवृद्ध सतियो सज्जनो और गुरुजनो के पैर छू कर उनका आशीर्वाद लेते हैं।

जामाताचरण प्रक्षालन

विवाह के शृंगारमय मधुर गीत गाती हुई सखियां वरवधु की आरती उतारती है। विवाह के दूसरे दिन अन्तःपुर मे गये गये शिव को नूतन सि सिंहासन पर बिठाकर सोने के घडे के जल से मेना शिव के चरण धोने की इच्छा व्यक्त करती है पर विनम्र शिव उन्हे ऐसा करने के लिए मना करते है और मेना के पैर छूते है।

बिदाई

विवाह के पश्चात शिव दो दिन हिमालय मे निवास करते है। बाद मे वह पार्वती को लेकर अपने निवास स्थान की ओर लौटते है। कवि हरिहर पाण्डेय अन्त में सब जल्दी जल्दी निपटाने के लोभ मे बिदाई का वर्णन नही करते। अन्त मे पांच या छह श्लोको मे ही शिव पार्वती का दाम्पत्य, कार्तिकेय जन्म और तारकासुर के वध की बात अत्यन्त संक्षेप मे करते है। शिव पार्वती के विवाह मे प्रायः सभी अंग दिखाई देते है किन्तु कवि का आशय शिव के स्वरूप और वेदान्त के सिद्धान्तो के स्थापन का ज्यादा लगता है।

पादटीप

१. षोडश संस्कार

२. मनुस्मृति: - अध्याय -3

३. आश्वालायन गृह्यसूत्र - २.७.७, आप गृह्यसूत्र - ४.६

४. देवर्षिराकर्ण्य वचांस्युमाया विज्ञानविद्याविनयान्वितानि ।अदृष्टपूर्वञ्च विलोक्य सत्वं मेने ध्रुवं दक्षसुता सतीयम ॥ -उमोद्वाहमहाकाव्यम - ९ . १

५. अभ्यर्थना मे अस्ति परीक्ष्य गौरीं चेदस्ति योग्या कृपया भवन्तः।जानन्तुः भुपस्य मतं स दित्सुश्चेदस्ति याचन्तु च तां मदर्थे ॥ - तत्रैव - ११ .६

६. मयाज्ञयाडतो भवतां जगत्यां शुभेच्छुकानां घरणीसुराणाम ।अनाथनाथाय मयोभवाय गौरी प्रदताऽघ्य द्वदा शिवाय ॥ - तत्रैव - ११.१०१

७. योगेश्वरीकामजितोर्विवाहं समागता द्रष्टुमलंकृतांगा: ।कुतूइलादिन्द्र२विन्दुवाताः कुबेरपाश्यग्निमयादिदेवा : ॥

८. एकाडडह तान वेदपुराणवेत्रो श्रृंगारहास्याभिनयप्रवीणा ।वयोडधिकत्वात महिलाडल्पज्ञा मनोविनोदे कविभिर्नियुक ॥ - तत्रैव - १४.१

९. आसुं सशक्तीशकृपां तथाडस्याः पुत्रप्रपौत्रैः पितृता२णाय ।धर्मर्थकामाननया सदैव सदा चरिष्यामि शिवोडप्युवाच ॥ - तत्रैव - १६ .१२

१०. पाणिं गृहीत्याडथ शिवः शिवायास्तामाहगृहणामि करन्तवाहम् ।स्वसौभगत्वार्थममोडध मायाः सामाहमृकत्वं भव गेहराज्ञी ॥ - तत्रैव - १६.२०

११. तत्रैव - १६. २१

१२. तां दर्शयित्वा ध्रुव माह देवो मम व्रतेते हृदयं दद्यामि ।भवेतथा तेऽनु ममापि चितं प्रजापतिस्त्वा नियुनक्तु मह्यम् ॥ तत्रैव - १६. २२

१३. प्रणेमस्तुस्तौ विषये भवानी प्राप्राशिषं वीरसुता भव द्राक् ।उभौ ततः पस्पृशतुः सतीनां पादान् वयोवृद्धसतां गुरुणाम् ॥ - तत्रैव - १६. २७

सन्दर्भ ग्रंथ

१. षोडश संस्कार
२. मनुस्मृतिः
३. कुमारसम्भवम् - श्रीप्रधुम्न पाण्डेय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण - २०१३
४. पारस्कर गृह्यसूत्रम् - सं . डॉ . जगदीशचन्द्रमिश्र चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, प्र.आ - १९९१
५. गोभिल गृह्यसूत्रम् - सं. डॉ. सुधाकर मालवीय, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, द्वि . आ .
६. उमोद्वाहमहाकाव्यम् - आचार्य हरिहर पाण्डेय, निर्मल प्रकाशन, वाराणसी, प्र. सं . - १९८५